International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 38-39

संत रविदास : साम्प्रदायिक सौहार्द के हितैषी

प्रियंका सिंह
रिसर्च/फैकल्टी, असोसीएट, भारतीय भाषा एवं साहित्य विभाग (हिंदी), गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मध्ययुग में जन्मे संत रविदास का काव्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना की आज से कई साल साल पहले था। सामाजिक सौहार्द और भाईचारे का प्रतीक उनकी रचनायें आज भी प्रेरणादायक हैं और जात – पात, ऊँच – नीच की भावना को दूर करने का सन्देश देती हैं। उन्होंने धर्म और जाति के आधार पर होने वाले भेदभावों का जैसा प्रबल विरोध किया वह आज के समाज की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। एक समतामूलक समाज का जो स्वप्न संत रविदास ने देखा था जिस पर बेगमपुरा की संकल्पना भी आधारित है वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में एक नितांत आवश्यक जरूरत है। वर्तमान परिस्थितियां ऐसी हैं की मनुष्य ही मनुष्य को नीचा दिखाने पर तुला हुआ है। कोई यदि आर्थिक रूप से संपन्न है तो वह गरीबों का शोषण करता है और स्वर्ण जातियाँ निम्न या दलितों का। संत रविदास के काव्य के अध्ययन से वह मनुष्य के अन्दर एक संचेतना लाता है और मानवीय मूल्यों के विघटन और ह्रास को दूर करने की बात करता है।

रविदास उदारवादी संत थे जिन्हें किसी प्रकार की प्रसिद्धि की कामना नहीं थी। वे जातिगत असमानता के प्रबल विरोधक थे और मानवीयता के सबल समर्थक। वे जन्म से नहीं अपितु कर्म से व्यक्ति को ऊंचा मानते थे।

वर्तमान समय में संविधान में निमित्त प्रावधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को समानता का अधिकार प्राप्त है परतु यह व्यवहार में इतना विद्यमान नहीं। समाज का एक बड़ा वर्ग आज भी छुआछूत, अस्पृश्यता और भेदभाव का शिकार है। वर्तमान में हो रहे साम्प्रदायिक और जातिगत हिंसा इस बात का स्पष्ट और ज्वलंत प्रमाण है। 'जाति' की भावना लोगों के अंतर्मन और आत्मा में गहरे पैठ गयी है। कर्म नहीं बल्कि जाति से ही व्यक्ति की पहचान बन गयी है। समतामूलक समाज ऊँच वर्ग की जातियों को स्वीकार्य नहीं है क्योंकि इससे उनके शोषण और दमन करने की नीति में विघ्न पड़ता है और वे नाक ऊंची करके चलने में खुद को असमर्थ पाते हैं। उनकी अन्य कई स्वार्थी नीतियों में भी बाधा पड़ती है।

जाति मनुष्य को नीच या बुरा नहीं बनती अपितु उसके गुण या कर्म उसको अच्छा या बुरा बनाते हैं। जातिवाद का दंश सबको पीड़ा देता है। 'मानवता' ही सबकी जाति होनी चाहिए। जब तक जातिवाद की भावना लोगों के मन – मस्तिष्क से विस्मृत नहीं हो जाती तब तक उनमे भावनात्मक एकरूपता नहीं आ सकती। संत रविदास का काव्य लोगों को जातिवाद से ऊपर उठकर भावनात्मक रूप से जोड़ता है। उनके काव्य में निहित सन्देश विश्व बंधुत्व और भाईचारे की नीव रखता है। उनके संदेशों पर चलकर व्यक्ति मानवीयता को सर्वोपरि रख कर सबके साथ भातृत्व का व्यवहार करता है।

संत रविदास की वाणी जो की मानवीयता, प्रेम, सौहार्द, भाईचारे का सन्देश देती है उस पर आज गंभीरता से चिंतन – मनन और उसकी सही व्याख्या करने की आवश्यकता है। उन्होंने खुद कई स्थानों पर स्वयं को 'चमार' शब्द से संबोधित किया है जिससे ज्ञात होता है की उन्हें निम्न जाती से सम्बन्ध रखने के कारण कोई संकोच या झिझक नहीं है। संत रविदास ने कहा है की ईश्वर मन में ही निवास करता है। उसको बाहर देवालय या मस्जिद में खोजना निरर्थक है व ईश्वर प्राप्ति के लिए आचरण और अंतर्मन की शुद्धता पर उन्होंने बल दिया है। वे कहते भी हैं – ''मन चंगा तो कठौती में गंगा''। डॉ . सुभाष चन्द्र के अनुसार – " रविदास ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि राम और रहीम, कृष्णा और करीम, ईश्वर और खुदा में कोई अंतर नहीं है। ये सब एक ही हैं। ये मनुष्य के मन में ही बसते हैं, इनको प्राप्त करने के लिए घर त्यागने की जरूरत नहीं है। रविदास के लिए ईश्वर की प्राप्ति किसी कर्मकांड का हिस्सा नहीं है, बल्कि उसके लिए अपने आचरण को पवित्र करने की जरूरत है।

राघो क्रिसन करीम हरि, राम रहीम खुदाय।
'रविदास' मेरे मन बसहिं,कहूं खोजहूँ बन जाय।।[1]

संत रविदास ने बार दृ बार इस बात को रेखांकित किया है की सब एक ही ईश्वर के अंश हैं। हिन्दुओं के भगवान् या मुसलमानों के खुदा में बस नाम का अंतर है। मूलतः दोनों एक ही हैं। रविदास ने हिन्दू और मुसलमानों के धार्मिक स्थलों को भी भिन्न नहीं माना। उन्होंने काबा और काशी में कोई भेद नहीं माना।

'रविदास' हमारे राम जोई, सोई है रहमान।
काबा कासी जानियाही, दोउ एक समान।।[2]

विभिन्न वर्गों में विभाजित समाज से वर्चस्वी वर्ग लाभान्वित होता था क्योंकि उसके अपने हित उससे पूरे होते थे ऐसे में संत रविदास ने समाज को ये सन्देश दिया की सबके शरीर में एक ही रक्त बहता है। ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को समान बनाया है, उनको एक जैसी शारीरिक बनावट प्रदान की है, कोई भेदभाव नहीं रखा तब मानव को भी भेदभाव रहित प्रेम और भाईचारे के साथ रहना चाहिए।

जब सभ करी दो हाथ पग,दोउ नैन दोउ कान।
'रविदास' पृथक कैसे भये, हिन्दू मुस्लमान।।[3]

जब ईश्वर ने कोई भेदभाव नहीं किया तो उनसे जुड़े धर्म को लेकर समुदायों में वैमनस्य और नफरत फैलाना अमानवीय और कुत्सित कार्य है ऐसा रविदास का मानना था। उनकी वाणी में साम्प्रदायिक सद्भाव लक्षित होते हैं। वे सभी धर्मों को समान आदर और सम्मान देते थे तथा कर्मकांडों और आडम्बरों का विरोध करते थे क्योंकि ये वास्तविक ईश्वर और मानवता से व्यक्ति को विमुख करते थे। धर्म के उन्नयन और प्रगतिशील रूप को उन्होंने स्वीकार और उसके रूढ़िवादी रूप का खंडन किया। उन्होंने किसी अन्य धर्म का विध्वंस चाहने वाले व्यक्ति को अधर्मी माना है। किसी भी धर्म में जब कट्टरता, रूढ़िवादिता और पाखंड आ जाता है तो वह विकृत हो जाता है और साम्प्रदायिकता की आग को बढ़ावा देने में योगदान देता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने रविदास के मानवीय धर्म पर उचित ही टिप्पणी की है की –" अन्य संतो की तुलना में महात्मा रविदास ने अधिक स्पष्ट और जोरदार भाषा में कहा है की 'कर्म ही धर्म है'। उनकी वाणियों से स्पष्ट होता है कि भगवद भजन,सदचारमय जीवन,निरंहकार वृत्ति और सबकी भलाई के लिए किया जाने वाला कर्म,ये ही वास्तविक धर्म है।"[4] कर्म के प्रति निष्ठा और लगन पर उन्होंने बल दिया। अपनी कथनी और करनी में ऐक्य स्थापित कर इसका महत्व प्रतिपादित किया। स्वयं अपने चर्मकार के व्यवसाय को भी कभी निम्न न समझकर उसे श्रेष्ठ बताया।

शोषित वर्ग को समाज में सम्मान और धन प्राप्ति से वंचित रखा गया प्उन्हें मान – सम्मान और आर्थिक बल प्रदान करना ऊँच वर्ग को स्वीकार्य नहीं था प्तब संत रविदास ने अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठा से इस बात को सामने रखा कि सबके भीतर एक ही ईश्वर का अंश है। कोई ऊंचा या नीची जाती का नहीं अपितु सब समान हैं। उनकी धारणा थी की जातिगत भेदभाव, धर्म संकीर्णता और अस्पृश्यता देश और मानवता के विकास में बाधक हैं।

उन्होंने समाज में एकता लाने और जातिगत – धार्मिक फूट और भेदभावों के कारणों का निवारण बताया। "वर्गविहीन, वर्णविहीन, जातिविहीन समाज की संरचना के लिए मूलमंत्र 'मानवीय एकता' का उद्घोष करते हुए रैदास बहुत ही मर्मस्पर्शी शब्दों में कह उठते हैं –

'जात दृ पांत के फेर में, उलझे रहए सब लोग।
मानुश्ता को खात हुई, रविदास जाति करि लोग।'[5]

रविदास की वाणी सांप्रदायिक तत्वों का पुरजोर विरोध कर मानवता की अलख जलाती है। साम्प्रदायिक घृणा और नफरतों से ऊपर उठती इनकी वाणी अपने संपूर्ण रूप में समाज को एक नयी दिशा देती है। साम्प्रदायवाद और जातिवाद से मुक्ति पाने के लिए रैदास की वाणी और उनका मानव धर्म ही सर्वोच्च है। उनके द्वारा दिया गया मानवीयता का सन्देश विश्वव्यापी बंधुत्व, भाईचारा, अस्मिता और समानता की अस्थाई रक्षा के लिए एक महतवपूर्ण घटक का काम करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. सुभाष चन्द्र, दलित मुक्ति की विरासत संत रविदास, पृ.35
2. वही, पृ.36
3. वही, पृ.37
4. वही, पृ.42
5. मीरा गौतम, गुरु रविदास रूवाणी एवं महत्व, पृ. 181